अंगुत्तरनिकाय में समाजोत्थान की रूपरेखा

(एकक निपात के संदर्भ में)

(एम. फिल. बौद्ध अध्ययन की उपाधि हेतु शोध-सारांश प्रस्तुति)

An Outline of Social Development in Anguttarnikaya

(In the context of Ekaka Nipata)

(Research Summary for the degree of M. Phil. Buddhist Studies)

शोधार्थी

प्रवीण आचरमन शंभरकर

एम. फिल. बौद्ध अध्ययन

पंजीयन क्र. : 2014/03/213/003

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

शोध-निर्देशक

डॉ. सुरजीत कुमार सिंह

प्रभारी निदेशक

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

(संस्कृति विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

सत्र 2014-15, नवंबर-2015

शोध-सारांश

अंगुत्तरनिकाय में समाजोत्थान की रूपरेखा

(एकक निपात के संदर्भ में)

समाज में जो समस्याएँ निर्माण होती है वे सभी मनुष्य को निराश करती है। जिससे बचने के उपाय ढूँढने में ही अधिकांश बुद्धिमान लोग अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देते हैं। लेकिन समाज में उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं के समाधान भगवान बुद्ध ने आज से लगभग 2600 साल पहले ही ढूंढ निकाले और अपने जीवन काल में ही 45 वर्षों तक लोगों तक पहुंचाए। भगवान बुद्ध ने अपने सभी उपदेशों को उनके पास आने वाले लोगों की बुद्धि का अनुमान लगाकर उन्हे बताया। इसीलिए बाद में उनके उपदेशों का संग्रह तीन पिटकों में, उन उपदेशों की प्रकृति के अनुसार विभक्त किया गया। हालांकि तीनों पिटकों की विषयवस्तु एक जैसी ही है। तिपिटकों में पहला सुत्तपिटक यह एक विशाल ग्रंथ है जिसका चौथा प्रमुख भाग अंगुत्तरनिकाय है। अंगुत्तरनिकाय विशाल ज्ञान का भंडार है जिसमें संसार के सभी दुःखों के अंत के लिए सटीक मार्गदर्शन दिया गया है। यह मार्गदर्शन समाज विकास के लिए बहुत उपयोगी है। प्रस्तुत शोध-कार्य में अंगुत्तरनिकाय ग्रंथ के प्रथम अध्याय एकक निपात का संदर्भ लेकर समाजोत्थान की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। एकक निपात अंगुत्तरनिकाय का पहला अध्याय (निपात) है। क्योंकि अंगुत्तरनिकाय संख्याओं पर आधारित सुत्तों का संकलन है, एकक निपात में उन्हीं सुत्तों का संग्रह है जिन्हें भगवान बुद्ध ने संख्या एक को आधार बनाकर दिया है। इसी प्रकार संख्या ग्यारह तक को आधार बनाकर भगवान बुद्ध ने अंगुत्तरनिकाय में उपदेश दिये है। संख्या आधारित सुत्त होने से ही इस ग्रंथ का नाम 'अंगुत्तर' अर्थात, 'अंको के आधार पर दिये गए उत्तर' पड़ा। जिस में एक से लेकर ग्यारह संख्या पर आधारित सुतों में समाज की हर बुराई का अंत करने के उपाय मिलते हैं। जैसे मनुष्य की अनैतिकता को समाप्त करने के लिए पंचक निपात में पाँच शील, अट्ठक निपात में आठ और दसक निपात में दस शील बताए गए हैं। इसी प्रकार मनुष्य के समाज के प्रति कर्तव्य, राज्य के प्रति कर्तव्य आदि बातें मनुष्य को एक सामाजिक जीव बनने में सहायता करती है। अंगुत्तरनिकाय में हमें उस समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार के इतिहास की जानकारी मिलती है। भगवान बुद्ध के उपदेशों में मनुष्य का सर्वथा कल्याण ही दिखाई देता है। मनुष्य को व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही प्रकार के विकास की आवश्यकता होती है। इसलिए उनके सभी उपदेशों में मनुष्य और समाज केंद्र में दिखाई देते हैं।

मनुष्य के सामाजिक विकास में योगदान योग्य होने के लिए उसका शारीरिक के साथ ही उचित मानसिक विकास होना आवश्यक है। अगर ऐसा नहीं हो तो मनुष्य समाज के लिए अहितकर सिद्ध होता है। एकक निपात में मनुष्य के स्वयं विकास से समाज विकास का योग्य मार्ग बताया गया है जो उसे आध्यात्मिक जगत तक ले जाता है। एकक निपात का और उसमें निहित समाज विकास के तत्वों का विश्लेषण सारांश में इस प्रकार है –

एकक निपात में क्रमशः रुपादि-वर्ग, निवरणप्रहाण-वर्ग, अकमनीय-वर्ग, अदान्त-वर्ग, प्रणिहितअच्छ-वर्ग, अप्सरासंघात-वर्ग, वीर्यारम्भ-वर्ग, कल्याणमित्रतादि-वर्ग, प्रथमप्रमादादि-वर्ग, द्वितीयप्रमादादि-वर्ग, अधर्म-वर्ग, अनापत्ति-वर्ग, एकपुद्गल-वर्ग, एतदग्र-वर्ग, अस्थानपालि-वर्ग, एकधर्मपालि-वर्ग, प्रसादकरधर्म-वर्ग, अपरअप्सरासंघात-वर्ग, कायगतास्मृति-वर्ग, अमृत-वर्ग आदि बीस(20) वर्ग हैं जिनकी सूत्रसंख्या 616 है। इन सभी वर्गों को धम्म और विनय के अध्ययन का स्त्रोत कहा जाए तो गलत न होगा। इन वर्गों में अभिधम्मपिटक के कठीन समझे जानेवाले अध्ययन विषय को भी उसकी अपेक्षा सरलतम व्याख्या से प्रस्तुत किया गया है। विनयपिटक में जो भिक्खुओं के नियम हैं, उन्हें यहाँ उपदेशों में, सुत्तों में कहा गया है वहीं गृहस्थों के लिए भी

गृहस्थी से संबन्धित सभी बातों में नैतिकता लाने के लिए प्रेरित करनेवाले उपदेश है। यह अंगुत्तरनिकाय की एक और विशेषता है। एकक निपात में आए भगवान बुद्ध के यह वचन कितने कल्याणकारी है जो मनुष्य को बताते हैं कि – *"नाहं, भिक्खवे अञ एकधम्मं पि समनुपस्सामि यो एवं महतो अत्थाय संवत्तति यथयिदं, भिक्खवे, कल्याणमित्तता। कल्याणमित्तता, भिक्खवे, महतो, अत्थाय संवत्तती "ति।।"*[1] अर्थात, "भिक्षुओं! मैं इस संसार में ऐसा कोई भी अन्य धर्म नहीं देखता जो हमारे लिए सर्वथा हितकर हो जैसी कि भिक्षुओ! हमारी यह कल्याणमित्रता, हमारी कल्याणमित्रता ही हमारे लिए, सर्वथा हितकर है।।" एककनिपात में आया हुआ यह भगवान बुद्ध का संदेश विश्वशांति एवं विश्वकल्याण के लिए कितना आवश्यक है यह तो हम भली प्रकार समझ ही सकते हैं। एककनिपात में मनुष्य के हित और सुख युक्त ऐसी-ऐसी बातें हैं जो उस काल में किसी भी मनुष्य या विद्वान द्वारा भगवान बुद्ध से पूर्व उद्घाटित नहीं हो पायीं थी। मनुष्य मन और शरीर का पूर्ण विज्ञान समझना और उसे अत्यंत कुशलता से शब्दबध्द करना, यह कार्य केवल भगवान बुद्ध ने किया। इससे यह पता चलता है कि भगवान बुद्ध की कुशलता एवं प्रतिभा तत्कालीन समाज से कईं आगे थी। मनुष्य के मन का उसके शरीर पर एवं व्यवहार पर क्या असर होता है यह रुपादिवर्ग में आएँ स्त्री-पुरुष के चित्त को संभ्रमित कर उसे अपने हित से हटा देने का जो विश्लेषण है, वह किसी वैज्ञानिक शोध से कम नहीं हैं। उसमें कहा गया है कि स्त्री के रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्पर्श पुरुष चित्त को चंचल कर देते है और वह फिर चित्त की एकाग्रता को प्राप्त करने में असमर्थ होता है। वैसा ही स्त्री के लिए भी पुरुष के रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्पर्श का परिणाम होता है। वर्तमान समय में या अतीत के समय में स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे की वजह से जो भी समस्याएँ आयी हैं। वह सब इन्हीं पंचस्कंन्ध की वजह से आई है।

मनुष्य का मानसिक विचलन, उसका अपने आसपास के सौंदर्यनिमित्तों को देखकर उनमें रस लेना, उनके प्रति आकर्षित होते हुये मनुष्य का उनमें राग पैदा होना। जिस कारण वह अपने अनुत्पन्न कामरागों की उत्पत्ति पुन: पुन: करता है एवं फिर उनमें ही सुख ढूंढता हुआ फिर से दु:खों के चक्र में फँस जाता है। यह सब वर्णन निवरणप्रहाण वर्ग में आता है। इस वर्ग में मनुष्य की मानसिकता को परिवर्तित करने के लिए प्रभावी मार्गदर्शन है कि अगर मनुष्य अपने दु:खों का सटीक कारण पहचान ले। उनके उत्पन्न होने का मुख्य कारण ही जान जाएँ तो उसे हटाना मनुष्य के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं। जैसे हम किसी डॉक्टर या मनोचिकित्सक के पास जाते है और हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी की बातों से ही हमारे रोग का कारण बता देता है वैसे ही भगवान बुद्ध ने सभी मनुष्यों की मानसिक अवस्था का कारण एकक निपात के ग्यारह वर्गों में विश्लेषित किया है। जिसमें मनुष्य के चित्त की एक-एक अवस्था को लेकर और उससे उसे आनेवाली समस्याएँ और उनके समाधान का विस्तार से विश्लेषण है। भगवान बुद्ध अपने जीवन में कितने सतर्क थे, यह उनका मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर इतना सूक्ष्म विश्लेषण जानकर ही पता चलता है। भगवान बुद्ध ने मनुष्य के आलस्य के कारण, रोग के कारण, दुर्गुणों के कारण एवं उनके निवारण पर विस्तार से एककनिपात में विश्लेषण किया है। समाज में मनुष्य को आदर सम्मान पाने के लिए स्वयं के व्यक्तित्त्व में निखार लाना आवश्यक है। उसी का संपूर्ण समाधान भगवान बुद्ध ने एककनिपात में किया हुआ जान पड़ता है। एकक निपात के बारहवें वर्ग अनापत्तिवर्ग से भगवान बुद्ध ने आध्यात्मिक साधना में लगे लोगों के लिए विशेष मार्गदर्शन दिया है। जिसमें उन्होने आध्यात्मिक प्रगति के लिए मनुष्य की योग्यता और वह योग्यता प्राप्त करने के उपाय भी दिए हैं। एतदग्रवर्ग भगवान बुद्ध के अग्रणी शिष्यों एवं उपासकों का ऐतिहासिक लेखाजोखा ही है। बौद्ध साधना का उच्चतम लक्ष्य 'निर्वाण' प्राप्ति है। इसे पाने के लिए मार्गदर्शक तत्वों का अट्ठानपालि, एकधर्मपालि, प्रसादकरधर्म, अपरअप्सरासंघात, कायगतास्मृति आदि वर्गों में आध्यात्मिक संज्ञाओं से युक्त मार्गदर्शन है। भगवान बुद्ध कहते हैं कि जिस साधक ने कायगता स्मृति की साधना नहीं की वह अमृत तत्व

---

[1] *अंगुत्तरनिकायपालि*, (हि. अनु.) (अनु.) स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, वाराणसी : बौद्धभारती, 2009, पृ. 3-69.

अर्थात निर्वाण को नहीं पा सकता। इस प्रकार मनुष्य को स्वयं के मानसिक विकास के साथ ही आध्यात्मिक विकास करने की आवश्यकता है। जिससे मनुष्य समाज में एक आदर्श प्रस्तुत कर पाएगा और सभी समस्याओं के मूल 'तृष्णा' को नष्ट कर पाएगा।

उपरोक्त बातों के साथ ही इस शोध कार्य से कुछ महत्वपूर्ण बातें पता चलती है वे ये कि 1) मनुष्य के मानसिक विकास में ही समाज विकास निहित है। मनुष्य अपनी भावनाओं पर तभी नियंत्रण कर पाता है जब वह अपने गुण दोषों का सही आकलन करें। उन्हें जान ले और उसके लिए दुःख का उत्पादन करने वाली ऊपर से सुख देने वाली जो भासमान चीजें हैं उनमें अशुभनिमित्त ढूंढ कर ही संसार में उत्पन्न होने वाले दुःखों को नष्ट किया जा सकता है। 2) मनुष्य अपनी मानसिक विकास के सतत अभ्यास के पश्चात ही आध्यात्मिक जगत में प्रवेश के लिए तैयार हो पाता है। 3) भगवान बुद्ध को शरण आनेवाली सर्वप्रथम उपासिका सेनानी पुत्री सुजाता थी। भगवान बुद्ध और संघ को सर्वप्रथम शरण आनेवाले उपासक तपस्सु और भल्लिक थे तथा बुद्ध, धम्म और संघ को सर्वप्रथम शरण आनेवाले पंचवर्गीय भिक्षु थे। इसप्रकार एक महत्वपूर्ण जानकारी इस शोध कार्य के पश्चात प्राप्त हुई।

इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य समाज को समाजोत्थान की बौद्ध परंपरा से अवगत कराना है, जो मनुष्य के स्वयं-विकास से आरंभ होती है। बौद्ध परंपरा में मनुष्य का भौतिक विकास तभी अच्छा माना जाता है जब वह समाज के हित में हो। बौद्ध परंपरा नैतिकता का आग्रह है, जिसे अपनाकर समाज एक आदर्श संस्कृति को स्थापित करेगा।

Research Summary

An Outline of Social Development in Anguttarnikaya

(In the context of Ekaka Nipata)

The problems occur in society disappoints people. Most of the intelligent people give their entire life to figure out the solutions for these problems, but The Buddha figured out all the solutions of such problems almost 2600 years ago and brought his teachings to people during 45 years of his life. The Buddha used to preach His teachings by figuring out the intelligence of people coming to Him. This was the reason that His teachings were collected in '*Tipitaka*' (three baskets) and differentiated depending on their nature, though the content of trio is same. '*Anguttarnikaya*' is the fourth big volume of the '*Sutt Pitaka*', it is a treasure of knowledge, in which one can find exact guidance towards the end of all *'Dukkha'* (pain) in the world. It is very useful in development of society. In present research work, '*Anguttarnikayas'* first chapter *'Ekaka Nipata'* is taken to figure out the outline of social development framework. *'Ekaka Nipata'* has those '*Sutta*' which are based on numbers, one to eleven. The Buddha used these numbers to explained His teachings. Anguttarnikaya is based on numbers so it is called '*Anguttara*' means 'answer based on numbers'. There are many solutions of social problems which are bound in numbers like one to eleven in *'Anguttarnikaya'*, e.g. for '*Chatari Ariya Sacchani*' (four Noble Truths) are mentioned in '*Chatukka Nipata*' and 'Ariya *Atthangiko Maggo'* (Eight fold Path) is in '*Atthaka Nipata*'. In *'Anguttarnikaya'* we can know the history and information from The Buddha's time about social, economical, political, geographical, religious etc. The Buddha's teachings deal with welfare of mankind. A person needs both type of development personal and social. That is why whole teachings of The Buddha point towards person.

Person needs physical and psychological development to contribute in social development. If it is not, it would be bad for the society. An *'Ekaka Nipata'* deals with a person's journey from his self development to social development which takes him towards spiritual world. The summary of social development elements in *'Ekaka Nipata'* is as following –

In *'Ekaka Nipata'* there are twenty *'Varga'* (classifications) named *'Rupaadi Varga', 'Nivarana-prahana Varga', 'Adaant Varga', 'Pranihita-accha Varga', 'Apsara-sanghat Varga', 'Veeryarambha Varga', 'Kalyana-mitratadi Varga', 'Pratham-pramadadi Varga', 'Adharma Varga', 'Anapatti Varga', 'Ekapudgala Varga', 'Etdagra Varga', 'Asthanpali Varga', 'Ekadharmapali Varga', 'Prasadkardharma Varga', 'Apara-apsarasanghat Varga', 'Kayagata-smruti Varga', 'Amrut Varga'* etc. These *'Varga'* contains 616 *'Sutta'*. It will not wrong, if we call these *'Varga'* a source of *'Dhamma'* and *'Vinaya'*. These *'Varga'* contains easy explanations of *'Abhidhamma Pitaka's'* hard elements too. There are *'Vinaya Pitaka's' 'Bhikkhu-niyama'* (rules for monks) as well as inspirational teachings for the people in society also. This is one more speciality of the *'Anguttarnikaya'*. The Buddha preaches in *'Anguttarnikaya'* that,

"Nahang, Bhikkhave, annyang ekdhammang pi samanupassami yo evang mahato atthaya samavattati yatha yidang, Bhikkhave, Kalyanamittata! Kalyanamittata, Bhikkhave, mahato, atthaya samavattati" ti"[2] means, "No, Monks, I don't see any other best thing in this world that does better to us is *'Kalyanamittata'* (friendship with good one, moral friendship). Monks, our friendship with better things does all the best for us." We can well understand that this message of The Buddha is very important for the welfare and peace of the universe. *'Ekaka Nipata'* contains such things about people, their happiness and welfare, which wasn't given attention by the intellects of His time. The Buddha understood and explained the science of mind and body. That means His talent and skills were latest to his time and society. The *'Rupaadi Varga'* is not less than any scientific research which explains about mind and its impact on human body and behaviour by the man and woman's mind. This explanation of man and woman's mind came in *'Rupaadi Varga'*, it says, woman's *'Rupa'* (look, figure), *'Shabda'* (words), *'Gandha'* (smell, fragrance), *'Rasa'* (taste) and *'Sparsha'* (touch) disturbs man's mind and troubles it to concentrate. Same thing happens to woman. These *'Panchaskandha'* (five elements) are the reasons of problems come before men and women in past and present.

Human psychological imbalance is due to passion about beauty in the world. This brings him unborn passion to existence. He feels happy because of this but it is a matter of *'Dukkha'* (pain). This is the subject matter of *'Nivarana-prahana Varga'*. This *'Varga'* tells that if human understands his reasons of pain then he can get over his psychological imbalance. The Buddha explained human psychological reasons in about eleven *'Varga'*. This explains human *'Chitta'* (mind), its stages and solutions over it. From this we know that The Buddha was very alert person. The Buddha guides them who are in spiritual practices from *'Anapatti Varga'*. In *'Etdagra Varga'* The Buddha Tells about His great pupils. It is a historical documentation. Buddhist meditation goal is *'Nirvana'*. Guidelines to the meditation in *'Asthanpali, Ekadharmapali, Prasadkardharma, Apar-apsara-sanghat, Kayagatasmruti Varga'* leads towards the *'Amruta'* (the ultimate goal of meditation) that is *'Nirvana'*.

With over mentioned things we came to some other important facts that –

1) Social development is based on people's mental development. If a person distinguishes between good and evil then he can control his emotions. With the help of these he can stop the *'Dukkha'* (pain in his life).
2) A person admits in the spiritual world only after his mental development.
3) *Sujata*, a daughter of *Senani* was first to believe in The Buddha, *Tapassu* and *Bhallika* was first to believe in The Buddha and *Dhamma*, *'Panchvargiya Bhikkhu'* (group of five monks) were first to believe in The Buddha, *Dhamma* and *Sangha*.

The main objective of this research is to show the role of Buddhist tradition in social development. By Buddhist tradition good developments goal is social welfare. Buddhist tradition insists morality in society that will develop an ideal social culture.

[2] *Anguttarnikayapali*, (Hi. Tr.) (Trl.) Swami Dwarikadasshastri, Varanasi : Bouddhbharati, 2009, pg. 3-69.